

[illegible]

09231

रुडं नमः शिवाय वज्रसत्वाय गैशु नमः सुल॥ यः क ग वा॥ सिधु त॥ समाधि ॥
किल नरावनागपटितिगु न्यतानकने, लंजा नन विष्टुं उविष्टव
जस्मि, र्कं कालकी लक्ष काल द्वा विमननिः ॥ सी ॥ अकरवी गारुत
वज्रया काल वज्रयं जल वज्र हन जाल विमान मधुश्च कल
सरु काल विष्टु कलि मयि, समिविराष्टा तन्मध्य पटिति व
जसत्वनू या न्मा यनावृत्त ये ला द्वा विज या यन, नामा वज्र के नो ष्म क

मउतवि
कि नम
ताज्ञा य
नमस्तन
नृ. धर
समाधि
जाय ५

सुचस्मरे नव कालि ना त्या आलार ननहा, धयन नि य म्मा कुष्मान
कल्या ना नल व ह ला म वि सं व यः क व न यं नि व, निखिल ज विष्टु व
दानि, निलयान रुविह, सुत स ६ दान न व्यावृत्त वक्रु गे या द द्वा कट ल डि
का ४ योगि मुखे स रु रीं ग ल न का व तु ली गिन र्ते ४ व मु दाल ला ट स्तु यः
कया ल गल वि नै गल द ह व नु धि न गिनः ॥ १ ॥ रू य हः समुष्टु मख
ला व्या द्वा व म्मा व ना नी ला नी ग व न यि ना द्वा कल क यि ल कृ गे न न क क

दि नागनाडा कृतमंत लावज वरु दारु विनूक ला र्था वज मुखि द्ययी वि
 वृद्धयै लर्न कनिष्ठ का द्ययी शृंखलि नै गऊ नीद्वय यशु तेने ला के वि
 उग्रयै मू दाया स्वारय ह्य समापनः सय्य क ना र्थी कुहाया हा वामा र्थी क
 यालय वंदे ग द धा ना गऊ नै क कान मूलदिग्मुखः स्वहृग गते क काना
 यमृत न भिरि दहादि पिद्या ना कृष्यै क कान सुनिन दहा को धमस
 मययत ॥ **धुय नी ना जन** शंखल स्नान पि वामुन पीव ग अ पीव ग अ

मद्यमी सस्नान युका नक वदन सर्वययुत लि का द्वा दू का द्वा दू स्नान
 र्थी युजा विधि र्थी वज थि र्थी जय मेन ॥ य धम्मा र्थादि ॥ यी वा य हालयु जा मा
 ला दी सु ॥ **किल न नाय मल जात र्थी ॥ कल न रा व ना नि ना ऊ न द व य जा नि**
ना ऊ न मलु लय जा मा हा नि रुय ॥ ॥ धन ला व जात क मी दे व लं
स्व र्थी रु य ॥ मा वा र्थी समुख न न नि स्य न द व ना ज (ग) स्था प्य ॥ यी
ति द्या या म द व या दू न ॥ रा व ना य उ य ॥ ग ग (ग) व स धे न धा ग न सी ग द

लाव का तय ॥ तदनु निषत्र कटांग तदव ता सं सु पा २३ या ध्मा न द य का द व या न वी ज वा या ग ऊ न या न
स्वयं स्नान पुस्त २ स्नातय ला व ना पा या दि व जा कृषा दि नि लां जन ला

वि कर्म लय जा य धर्म सि
 वि य वी ज र्थ नि २
 वि य वी ज र्थ नि २

नृपैः सर्वेषां मि सत्त्वं सी गुरु न ये मा ह्यु लये ४ यनि वृत्तं म ह्यु लाधियति मा
 ला क्य ^{पा १} यकै ल्म य पृष्ठादि य ज्ञा ॥ स्नान या स ल जा द व ^{पा २} ल द व या क ॥ उं सर्व
 न थ ग न स न लिन विलासन नमिने विलासन नमिने नामामि रा ग दै त
 उ ४ कं वै द ४ यनि ^{पा ३} कं कं शु मा अलि ना थ हा भा समय स्त ३ ॥ थ ^{पा ४} ति व द य
 व स्नान या ग ल लाल ॥ थ न द्ध ह्यु थ स्मि पृथया य सि थ ला क्य ॥ ग ग व म म क
 स द वि द्या ना जं न मा सु न ॥ क र्ते मि क्क मि ने ना थ यनि क्क क नृ ल्म नार्क ॥ १॥
 ३

व्या ल्म म न र्क यार्थं युष्मा र्क य ज्ञा नाय व ॥ न न र क स्य ग ग द नृ य सार्द क
 तु म रु सि ॥ य थ दि स र्व व द्वा द्या सु धि ने र्म य नि लि ता ॥ मा या द व्या य थ क
 क्रो ग द्ध य नि र्म ल कृ ती ॥ अ व स स न न ना र्थं रू त्वा य ज्ञा दि का र्म मी ॥ गृ ह्णान
 म म क स्या र्थ ^{पा ५} वा धि रू त्वा य ज्ञा द्या ॥ स म न्वा रु नै तु मा व द्वा ज ग र्व क क्रिया र्थ द
 ४ ॥ रु ल ल्म वा धि स त्वा य्थ यो ग्ध न्या म रु द व ना ला क यो ला य्थ रू ना र्म वा धि म
 ॥ १॥ १॥ स ना रि न ना ४ स त्वा य क वि द्ध ज व द्ध य ४ म म्का ५ रु म द्या व जि

ऊगइ

पर्व
दक्षिण
पश्चिम
उत्तर
अग्नि
वैश्वानर
वायुर्व
ॐ नमो
ब्रह्म

कथं कथामयं तन्मन्त्रमयं न विवसात्तादयस्ते दत्ता साक्षात्सिद्धनवीक्रियां
गार्थं लक्ष्मिं गार्थं गार्थं न लक्ष्मिं विद्यात्ता दत्ता ॥ १ ॥ जियनिस्वस्थी विद्यात्ता गार्थी
विनिष्पन्नं ४ नस्मिन्निधुनि लिलिनास्मिन्निधुनि सर्वदिग्गजं कर्मात्ता दत्ता नस्मिन्
वैश्वानरादिद्युवक्रुर्गार्थी लिलिनास्मिन्निधुनि सर्वदिग्गजं कर्मात्ता दत्ता नस्मिन्
हृन्नालिहाविद्यात्ता दत्ता नस्मिन्निधुनि सर्वदिग्गजं कर्मात्ता दत्ता नस्मिन्
विद्यात्ता नस्मिन्निधुनि सर्वदिग्गजं कर्मात्ता दत्ता नस्मिन्निधुनि सर्वदिग्गजं कर्मात्ता दत्ता

रक्षिदानविधिः

१ वातयाजपूजायासं पत्रादव वडसूर्ययाग
वातस्यं लुपति स दद्यात् नक्त १ मंजीः स्वाहा ॥ १

|| 121212
12121212
12121212
12121212
12121212

|| 12121212
1212121212
1212121212
1212121212
|| 1212121212
1212121212
1212121212
1212121212

|| 121212
1212121212
1212121212
1212121212
1212121212

121212121212
121212121212
121212121212

121212121212
121212121212
121212121212

|| 121212
121212121212
121212121212

|| 1212121212
|| 1212121212
121212121212

121212121212
121212121212

121212121212
121212121212

121212121212
121212121212

121212121212
121212121212

|| 121212
121212121212
121212121212
121212121212
121212121212
|| 1212121212
121212121212
121212121212
121212121212
121212121212
121212121212

|| 121212
1212121212
1212121212
1212121212
1212121212

1212121212
|| 121212121212
121212121212
121212121212
121212121212

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

150

151

152

153

154

Handwritten text in Devanagari script, likely a religious or philosophical passage. The text is written in a cursive style on aged, yellowed paper. It begins with a small symbol resembling a stylized 'Om' or 'Aum' character. The script is dense and fills most of the page.

Handwritten text in Devanagari script, continuing the passage from the top page. The text is written in a cursive style on aged, yellowed paper. It begins with a small symbol resembling a stylized 'Om' or 'Aum' character. The script is dense and fills most of the page.

